[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3231

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन एक दृष्टिकोण

किरण बडेरिया, आलोक गोयल, राकेश कवचे
दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन म.प्र.

प्रस्तावना

जैव विविधता हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। ये हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं। अभी तक लगभग 1.75 मिलियन प्रजातियों की पहचान हो चुकी है। हालाँकि वैज्ञानिकों का मानना है कि हमारे ग्रह पर लगभग 13 मिलियन प्रजातियाँ हैं। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति ने मानव के लिए इस ग्रह को आवास योग्य बनाने में मदद की है। इनके बिना हम अपने जीवन की कल्पना नही कर सकते। जैव विविधता हमारे जीवन के लिए आवश्यक कई वस्तुएँ एवं सेवाएँ उपलब्ध कराता है। ये वो स्तम्भ हैं जिन पर हमने अपनी सभ्यता बसायी है। आर्थिक समृद्धि के लिए उत्तरदायी कई उद्योगों का आधार ये जैव विविधता है। इनको खतरा पहुँचाने का मतलब है हमारी खाद्य आपूर्ति, पर्यटन व लकड़ी, ऊर्जा और चिकित्सा के स्रोत को खतरा पहुँचाना है। हमारा व्यक्तिगत स्वास्थ्य और हमारी अर्थव्यवस्था तथा मानवीय सभ्यता को निरन्तर आपूर्ति इन्हीं जैव विविधता से होती रहती है। ऐसे में इनके अस्तित्व पर खतरा हमारे अपने जीवन पर खतरा है। फलतः जैव विविधता की उपस्थिति इस सुंदर ग्रह पर हमारी उपस्थिति का द्योतक है।

भारत में जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित कार्रवाई वर्तमान में विकास में कार्बन की तीव्रता को कम करने पर केन्द्रित है। परन्तु हम एक निश्चित अवधि तक उत्सर्जनों को शीर्ष पर ले जाने, तब तक विकास और वृद्धि को ईष्टतम स्तर पर पहुँचने देने और फिर उत्सर्जनों को घटने देने की चेष्टा भी कर रहे हैं, किन्तु कार्बन का यह अवकाश जैवविविधता के संरक्षण के प्रयासों के अनवरत प्रतिकूल भी हो सकता है। उदाहरण के लिए उत्सर्जनों के 'शीर्ष पर पहुँचने' की अवधारणा का जैवविविधता के लिए कोई मूल्य नहीं है और यह सक्रिय रूप से इसके लिए खतरा बन सकती है। एक प्राकृतिक वासस्थान को एक बार नष्ट हो जाने के पश्चात् पुनर्स्थापित होने में दशकों का समय लगता है, क्योंकि हम मनुष्य निर्मित मूलभूत ढ़ाँचा खड़ा करते हैं।

जैव विविधता पृथ्वीवासियों की साझी सम्पदा है, जिसे बचाना विश्व समुदाय का समूहिक उत्तरदायित्व है। मानव द्वारा अपनी क्षमता के अनुरूप प्राकृतिक वातावरण में परिवर्तन के फलस्वरूप जीवों की अनेक जातियाँ लुप्त हो गई हैं या लुप्त होने की कगार पर हैं। जैवविविधता का बने रहना समस्त स्थलीय एवं जलीय जीवों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

1. उपभोगात्मक उपयोग : विविध जीव–जन्तु एवं पेड़–पौधे हमारे लिए अनेक रूपों में उपयोगी हैं। मानव अपने उत्पत्तिकाल से ही विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जीव–जगत पर निर्भर रहा है। इमारतों एवं ईधन हेतु लकड़ी, चारा, मछली, माँस, रेशे, शहद, माँस, खाद्यान्न, औषधि आदि का उपभोग वाणिज्यिक अथवा जीवन निर्वाह के उद्देश्य से किया जाता रहा है। हमारे भोजन का अधिकांश भाग जीव–जगत से ही प्राप्त होता है। मानव ने उपभोग की दृष्टि से अधिक उपयोगी प्राणियों एवं पौधों को घरों में ही संरक्षण देना प्रारंभ किया जिसका परिणाम कृषि एवं पशुपालन के रूप में देखने को मिलता है।

2. उत्पादक उपयोग : उपभोक्ता के रूप में मानव के लिए जीवों की प्रकृति उत्पादक की है। वनों से इमारती लकड़ी, फल–फूल, गोंद, लाख व जड़ी–बूटियाँ, कृषि से विभिन्न फसलों तथा पशुपालन से दूध, माँस, ऊन आदि का उत्पादन होता है। जैव विविधता के कारण ही उत्पादों में विविधता पाई जाती है।

3. सामाजिक महत्त्व : विभिन्न जीव–जन्तु मानव समाज के अभिन्न अंग हैं। कृषि, पशुचारण, आखेट एवं वनोपज एकत्रीकरण पर निर्भर समुदायों के लिए जीव–जन्तुओं की विविधता जीवन का आधार है। विभिन्न

चलवासी जातियाँ एवं आदिवासी समाज आज भी जैव विविधता से प्रत्यक्ष प्रभावित होती हैं। उनके सामाजिक संगठन व रीति–रिवाजों में विभिन्न प्रकार के वनों व जानवरों का विशिष्ट महत्त्व होता है। जीव जन्तुओं को देवतुल्य मानकर उनकी पूजा भी की जाती है।

4. नीतिपरक महत्त्व : जीव–जन्तुओं की विविधता का मानव के लिए नीतिपरक या आचरणगत महत्त्व भी है। जीव–जन्तुओं के माध्यम से जीवनोपयोगी शिक्षाओं को सरल व सरस रूप में व्यक्त किया गया है। शेर जैसी निडरता, बगुले जैसी एकाग्रता, हिरण जैसी चपलता, काग जैसी चेष्टा, श्वान जैसी स्वाभिभक्ति आज भी मानव आचरण के प्रतिमान माने जाते हैं।

5. सौन्दर्यगत महत्त्व : वनस्पति एवं प्राणियों की विविधता पृथ्वी पर प्राकृतिक सौन्दर्य में अभिवृद्धि करती है। नाना प्रकार के जीव–जन्तु, वृक्ष, लताएँ इत्यादि प्राकृतिक सौन्दर्य के पर्याय हैं। चिड़ियों की चहचहाहट, पवन के झोंकों से झूलते वृक्ष, कुलांचे भरते हिरण के छोने, कोयल की कूक, पपीहे की पी भला किसका मन नही मोह लेती है। जैव विविधता से सम्पन्न प्राकृतिक स्थल पर्यटन केन्द्रों के रूप में विकसित हुए हैं।

6. पारिस्थितिकी महत्त्व : किसी भी पारिस्थितिक तंत्र में विभिन्न जैविक घटकों का विशिष्ट महत्त्व होता है। उत्पादक, उपभोक्ता एवं अपघटक के रूप में समस्त जीव एक पारिस्थितिक तंत्र के संचालन के आधार होते हैं। पारिस्थितिक तंत्र में किसी भी वनस्पति या जन्तु जाति की संख्या घटती है तो पारिस्थितिक तंत्र में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। भोजन श्रृंखला में सूक्ष्म जीवों से लेकर चरम उपभोक्ता का विशेष महत्त्व होता है। पारिस्थितिक संतुलन के लिए जैव–विविधता बने रहना आवश्यक है। अपनी प्रजातियों और परितंत्रों के कारण जैव विविधता से अनेक प्रकार के पर्यावरणीय लाभ होते हैं, जो अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तरों पर महत्त्वपूर्ण हैं। ऑक्सीजन का उत्पादन, कार्बन डाइऑक्साइड में कमी, जल चक्र की निरन्तरता और मिट्टी की सुरक्षा ऐसे कुछ लाभ हैं।

वर्तमान में सभी इस बात को मानते हैं कि जैव–विविधता की हानि जलवायु में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परिवर्तन ला रही है। वन कार्बन डाईऑक्साइड को कार्बन और ऑक्सीजन में बदलने के प्रमुख साधन हैं। वनों के आवरण का विनाश और साथ में औद्योगिकीकरण के कारण कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसों का बढ़ता उत्पादन 'ग्रीन हाउस इफेक्ट' में वृद्धि कर रहा है। ग्लोबल वार्मिंग द्वारा ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्री जल स्तर का बढ़ना तटवर्ती देशों के लिए लगातार चिंता का विषय बना हुआ है। इन सबसे वातावरण में भी भारी परिवर्तन आ रहे हैं और तापमान बढ़ रहा है, कुछ क्षेत्रों में भयंकर सूखे की स्थिति है तो कहीं अप्रत्याशित बाढ़ें निरन्तर कहर बरपा रही हैं।

- पोषक तत्त्वों का पुनर्चक्रण, मृदा का निर्माण, जल और वायु का परिचालन, विश्व स्तर पर जीवन के आधार को बनाए रखना, परितंत्र के अंदर जल के संतुलन की निरंतरता को बनाए रखना, जलविभाजकों का संरक्षण, नदियों–नाला आदि में प्रवाह की निरंतरता, अपरदन पर नियंत्रण, स्थानीय बाढ़ आदि की कमी।

भोजन, वस्त्र, आवास, ऊर्जा, दवाएँ ये सभी ऐसे संसाधन हैं जिनका जैवमंडल की जैवविविधता से प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध है।

आज यह बात स्पष्ट है कि मानव जाति के कल्याण और जीवन रक्षा के लिए जैविक संसाधनों का संरक्षण अनिवार्य है।